DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
भाषा में परिवर्तन की दशाएँ
Part -3
LIVE
15-04-2024 05:00 PM

3. आगम
4. लोप
5. समाक्षर लोप
6. वर्ण विपर्यय
7. महाप्राणीकरण
8. अल्पप्राणीकरण
9. घोषीकरण
10. अघोषीकरण
11. अनुनासिकीकरण
12. ऊष्मीकरण
13. मात्रा भेद
14. संधि-कार्य

(५) समाक्षर - लोप (Haplology)

इसको अक्षर - लोप और सम- ध्वनिलोप भी कहते हैं । जहाँ पर दो समान ध्वनियाँ एक के बाद दूसरी आती हैं, वहाँ पर उच्चारण की सुविधा के लिए उनमें एक का लोप कर दिया जाता है। यह नाम अमेरिकन भाषाविज्ञानी प्रो० ब्लूमफील्ड (Bloomfield) ने दिया है। यह दो शब्दों को मिलाकर बना है - १. ग्रीक शब्द Haplous = एक, २. ग्रीक शब्द Logos शब्द, अर्थात् दो ध्वनियों के स्थान पर एक ध्वनि का शेष रहना ।

जैसे- खरीददार = खरीदार

शेववृध — शेवृध

जहीहि - जहि

शष्पपिंजर — शष्पिजर

वितस्ति —बित्ता, बीता

नाककटा - नकटा

हिरण्यमय — हिरण्मय

खरीददार- खरीदार

त्रि + ऋच - तृच

(६) वर्ण - विपर्यय (Metathesis)

इसको विपर्यय, वर्ण- व्यत्यय, स्थान- विपर्यय या स्थान - परिवर्तन भी कहते हैं । यह दो शब्दों को मिलकर बना है -Meta - परिवर्तन, Thesis - ग्रीक, Tithemi = स्थान । कभी-कभी किसी शब्द में आने वाले स्वर या व्यंजन का स्थान असावधानी के कारण या जानबूझकर बदल देते हैं। वर्ण- परिवर्तन प्राचीनकाल से प्रचलित है । निरुक्त आदि में भी इसके उदाहरण मिलते हैं ।

लखनऊ = नखलऊ   मतलब = मतबल

कृत् > कर्त-तर्क   स्नान- नहाना   प्रत्यभिज्ञान-पहचान

हिंस् > हिंस- सिंह   लखनऊ-नखनऊ   चाकू-काचू

सृज् > सर्ज-रज्जु   मतलब - मतबल   वाराणसी- बनारस

अम्लिका-इमली   पहुँचना-चहुँपना   ब्राह्मण बाम्हन

आद्यांश - विपर्यय (Spoonerism) -आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० स्पूनर (W.A. Spooner) इस प्रकार की त्रुटि प्रायः करते थे। अतः वर्ण-विपर्यय को Spoonerism स्पूनरिज्म भी कहते हैं । उन्होंने एक छात्र से — You have wasted a whole term. (तुमने पूरा सत्र नष्ट कर दिया है,) के स्थान पर कहा कि You have tasted a whole worm. (अर्थात् तुमने पूरे कीड़े का स्वाद लिया) । waste को taste और term को worm कह गए।

(७) महाप्राणीकरण (Aspiration)

कभी-कभी अल्पप्राण ध्वनियों को मुखसुख के लिए महाप्राण बोला जाता है। **जैसे-**

गृह-घर

परशु - फरसा

धृष्ट- ढीठ

वाष्प-भाप

शुष्क-सूखा

वेष-भेष

महाप्राण

2, 4

श् ष् स् ह्

अल्पप्राण

1, 3, 5

य् व् र् ल्

(८) अल्पप्राणीकरण (De-aspiration)

कभी-कभी उच्चारण की सुविधा के लिए महाप्राण ध्वनियों को अल्पप्राण कर देते हैं । जैसे-

धधार-दधार स्वादिष्ठ - स्वादिष्ट बुध् + धि-बुद्धि

धधौ-दधौ शुध् + धि-शुद्धि सिन्धु - हिन्दु

(६) घोषीकरण (Vocalization)

कभी-कभी मुख-सुख के लिए अघोष ध्वनियों को घोष कर दिया जाता है। **जैसे-**

शाक-साग

काक-काग

शती - सदी

नकद-नगद

कंकण-कंगन

एकादश- एगारह

घोष	अघोष
हश्	खर्
3, 4, 5	1, 2
ह्, य्, व्, र्, ल्	श् ष् स्

(१०) अघोषीकरण (De-vocalization)

इसमें घोष ध्वनियों को अघोष कर देते हैं।

जैसे-

तद् + पर - तत्पर सं + भृ (भर्) - confer मदद-मदत

उद् + कट-उत्कट प्र + भृं (भर्) - prefer वाग् + पति - वाक्पति

(११) अनुनासिकीकरण (Nasalization)

मुख-सुख के लिए अनुनासिक - रहित शब्दों को भी अनुनासिक - युक्त कर देते हैं। यह अनुनासिकता दो प्रकार की है

१. सकारण — शब्द में नासिक्य ध्वनि थी, अतः विकसित रूप में अनुनासिक आया। चन्द्र-चाँद, अन्धकार- अँधेरा, कम्पन-काँपना ।

उष्ट्र → ऊँट

निद्रा = नींद

२. अकारण - शब्द में नासिक्य ध्वनि न होने पर भी विकसित रूप में अनुनासिकता आ जाती है । जैसे-

सर्प- साँप　　अक्षि- आँख　　भ्रू-भौं　　निद्रा- नींद

उष्ट्र-ऊँट　　अश्रु-आँसू　　इष्टका - ईंट　　उच्च-ऊँचा

(१२) ऊष्मीकरण (Assibilation)

कुछ ध्वनियों को ऊष्म ध्वनि में परिवर्तित कर दिया जाता है। जैसे— केंन्टुम् वर्ग की भाषाओं की क् ध्वनि सतम् (शतम्) वर्ग की संस्कृत और अवेस्ता भाषा में स या श ऊष्म ध्वनि के रूप में प्राप्त होती है। जैसे- centum (केन्टुम्) - शतम्, octo (ओक्टो) - अष्ट ।

ओक्टो
octo

अष्ट

(१३) संधि-कार्य

कतिपय शब्द विकसित होने पर मध्यगत व्यंजनों के लोप होने से निरन्तर अनेक स्वर - ध्वनि-युक्त हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में उनमें संधि-कार्य हो जाता है।

जैसे—

नयन > नइन- नैन　　अवतार- औतार　　शत-सौ

वचन > वइन-बैन　　उपल-ओला　　सपत्नी - सौत

(१४) मात्रा - भेद

प्रयत्नलाघव के लिए कभी दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर देते हैं और कभी ह्रस्व को दीर्घ ।

जैसे-

वानर-बन्दर आराम- अराम 'प्रियतम-पीतम अद्य-आज

आभीर - अहीर आलाप-अलाप पुत्र-पूत भक्त-भात

1. (i) भाषाविज्ञाने यो-हे-हो- सिद्धान्तः कस्मिन् प्रसङ्गे प्रवृत्तः ?

(ii) 'यो- हे- हो सिद्धान्त' का सम्बन्ध है?

UP PGT - 2000, UP GDC-2014

(A) भाषोत्पत्ति से

(B) ध्वनिपरिवर्तन से

(C) भाषावर्गीकरण से

(D) अर्थविस्तार से

2. भाषा के 'धातु सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं- UP PGT - 2005

(A) रूसो

(B) मैक्समूलर

(C) हारडर

(D) अरस्तू

3. भाषा की उत्पत्ति विषयक 'समन्वय सिद्धान्त' के प्रवर्तक भाषाशास्त्री हैं- UP PGT - 2009

(A) प्लेटो

(B) हनरीस्वीट

(C) जी. रेवेज

(D) न्वारे

4. भाषा की उत्पत्ति विषयक 'रणन सिद्धान्त' के मूल प्रवर्तक स्वीकार किये जाते हैं। UPPGT 2010, UK TET-2011

(A) रूसो

(B) सुसमिल्श

(C) प्लेटो

(D) न्वारे

5. 'पण्डित जी पण्डीजी' इसमें ध्वनिपरिवर्तन का कारण है-

UGC 25J-2004

(A) प्रयत्नलाघव

(B) बलाघात

(C) सन्धि

(D) अनुनासिकता

6. धर्म का 'धम्म' होना किसका उदाहरण है-

UP GIC-2009, UP GDC-2008

(A) तालव्य नियम

(B) सादृश्य

(C) समीकरण

(D) विषमीकरण

7. (i) प्रयत्नलाघव कारण है-

(ii) प्रयत्नलाघवः कारणमस्ति-

(iii) 'प्रयत्नलाघवम्' इति कस्याभ्यन्तरकारणमस्ति?

UP GIC - 2009. G GIC - 2015, UPGDC-2012

(A) ध्वनि-नियम

(B) अर्थ- परिवर्तन

(C) भाषा का ह्रास

(D) ध्वनि परिवर्तन

8. भाषाविज्ञान की दृष्टि में 'प्रयत्नलाघव' का अर्थ है? DL (H) - 2015

(A) शीघ्र बोलना

(B) कम समय में अधिक बोलना

(C) बोलने की मितव्ययिता

(D) उच्चारण की सुविधा

9. 'वाराणसी' का 'बनारस' रूप में विकास उदाहरण है?

DL (H) - 2015

(A) वर्ण-विपर्यय का

(B) व्यञ्जनागम का

(D) स्वर- व्यञ्जनागम का

(C) व्यञ्जन लोप का

10. वर्णलोपस्य उदाहरणम् अस्ति - UGC 25 D- 2014

(A) आस्थत्

(B) ज्योतिः

(C) गतम्

(D) द्वारः

11. ध्वनिपरिवर्तनस्य कारणं नास्ति- UK SLET - 2015

(A) प्रयत्नलाघवं मुखसुखं वा

(B) क्षिप्रभाषणम्

(C) भावातिरेकः

(D) समीकरणं विषमीकरणं वा